

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 30, प्रकाशितवाक्य 22, नया यरूशलेम और कैसे पढ़ें

रहस्योद्घाटन की पुस्तक

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह अंतिम सत्र 30, प्रकाशितवाक्य 22, नया यरूशलेम, और रहस्योद्घाटन की पुस्तक कैसे पढ़ें।

तो 21, श्लोक 24 और 26 में राष्ट्र कौन हैं, और वे कहाँ से आते हैं? कुछ लोगों ने इसकी व्याख्या उन राष्ट्रों के संदर्भ के रूप में की है जिन्हें पूरे इतिहास में मुक्ति मिली है और अब वे नए यरूशलेम में हैं और यह निश्चित रूप से संभव है।

हमने अध्याय 5 और यहाँ तक कि अध्याय 1 में भी देखा कि मसीह ने हर जनजाति, भाषा, भाषा और राष्ट्रों के लोगों को छुटकारा दिलाया है, और कुछ लोग सुझाव देंगे कि हम यहाँ यही देखते हैं। हालाँकि, जब आप प्रकाशितवाक्य का पाठ पढ़ते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस खंड में राष्ट्रों और राजाओं का संदर्भ है, विशेषकर पृथ्वी के राजाओं का, जॉन उन्हें पृथ्वी के राजा कहते हैं और अब राष्ट्र, वे ही प्रतीत होते हैं जो जानवर के साथ सांठगांठ कर ली है, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने जानवर का पक्ष ले लिया है और जिसका शासन है और अब वे नए यरूशलेम में प्रवेश कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि यहां जो चल रहा है वह यही है।

हालाँकि अध्याय 19 और 20 में हमने देखा है कि उन्हें पहले ही नष्ट कर दिया गया है और उनका न्याय किया जा चुका है, अब वे नए यरूशलेम में प्रवेश करते हैं। मुझे लगता है कि जो हो रहा है वह यह है कि जॉन दो छवियों को एक साथ रख रहा है, एक अंतिम उद्धार की और एक अंतिम न्याय की, ताकि परमेश्वर के न्याय की संपूर्ण प्रकृति को प्रदर्शित किया जा सके, बल्कि उसके उद्धार की संपूर्ण प्रकृति को भी प्रदर्शित किया जा सके। जॉन को श्रेणियों की मात्रा निर्धारित करने में कोई दिलचस्पी नहीं है, मानो यह कहना हो कि 19 और 20 में जिन लोगों का न्याय किया गया उनमें से बचे हुए लोग क्या करते हैं।

वह हमें यह नहीं बताता, न ही वह बताता है; जाहिर है, मुझे नहीं लगता कि जॉन सोचता है कि राष्ट्रों का हर अंतिम व्यक्ति नए यरूशलेम में प्रवेश करता है, लेकिन जॉन बिल्कुल सटीक शब्दों में बोलता है। एक ओर, 19 और 20 में पृथ्वी के सभी राजाओं और सभी राष्ट्रों का न्याय किया गया है। अब, हमारे पास पृथ्वी के राजा और राष्ट्र नए यरूशलेम में प्रवेश कर रहे हैं।

क्या चल रहा है? रहस्योद्घाटन में अन्य छवियों की तरह, मुझे नहीं लगता कि हमें इसे शाब्दिक रूप से नहीं लेना चाहिए। लेकिन इसके बजाय, यह जॉन द्वारा राष्ट्रों के पूर्ण न्याय को प्रदर्शित करने का एक तरीका है, बल्कि नए यरूशलेम में शामिल किए जाने वाले राष्ट्रों के पूर्ण उद्धार को भी प्रदर्शित करता है। और हमने देखा है कि इसका कारण, जॉन को जो प्रदर्शित करना चाहिए उसका एक हिस्सा है, और उसने पहले ही संकेत दिया है, कि इस दुनिया का राज्य ईश्वर और यीशु मसीह का राज्य बनना चाहिए।

इसका एक भाग यह भी है कि जो राष्ट्र, जो जानवर के शासन के अधीन हैं, उन्हें अब ईश्वर और यीशु मसीह के शासन में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। और शाब्दिक स्तर पर, इसका मतलब यह नहीं है कि राष्ट्रों में हर एक अंतिम व्यक्ति या हर कोई जो जानवर का अनुसरण करता था, आदि, आदि, अब स्वचालित रूप से नए यरूशलेम का हिस्सा बन जाता है। लेकिन एक बार फिर, यह जॉन के उद्देश्य को विफल कर देगा कि वह मात्रा निर्धारित करने की कोशिश करे और कहे कि 60% राष्ट्र या उनमें से आधे न्याय के लिए और आधे मोक्ष के लिए जाते हैं क्योंकि जॉन भगवान के राज्य के पूर्ण आगमन, शैतान और उसकी पूरी हार का प्रदर्शन करना चाहता है। राज्य, और परमेश्वर के राज्य के पूर्ण आगमन का अर्थ है कि जो लोग जानवर के शासन के अधीन हैं, राज्य के हस्तांतरण का अर्थ है कि जो लोग जानवर के शासन के अधीन हैं वे अब स्वयं परमेश्वर के शासन के अधीन आते हैं।

वे अब भगवान के हैं. तो, पूर्ण न्याय और पूर्ण मुक्ति का दृश्य बस इसके विपरीत है। ईश्वर के न्याय की पूर्ण व्यापक प्रकृति, लेकिन उसके द्वारा लाए गए मोक्ष की पूर्ण और व्यापक प्रकृति भी।

और यह संभव है कि हम इसे शाब्दिक स्तर पर समझें, क्योंकि जिन लोगों का न्याय नहीं किया जाता है और जो न्याय से बच जाते हैं और परिवर्तित हो जाते हैं, वे ही नए यरूशलेम में प्रवेश करते हैं। लेकिन जॉन की भाषा उससे बहुत अलग है. वह इसकी मात्रा निर्धारित नहीं करता.

वह बस न्याय और मोक्ष दोनों की कठोर प्रकृति दिखाना चाहता है; नई सृष्टि में उसके राज्य के पूर्ण आगमन और व्यापक प्रकृति का अर्थ है शैतान के शासन के अधीन लोगों का अब नए यरूशलेम में यीशु मसीह में परमेश्वर के शासन में प्रवेश करना। यह भी संभव है कि इसका एक प्रकार का हॉर्टिरी कार्य हो। अर्थात्, यह उन विकल्पों को प्रस्तुत करता है जो राष्ट्रों के लिए उपलब्ध हैं, या तो मुक्ति या न्याय।

लेकिन मुख्य रूप से, मुझे लगता है कि विरोधाभास मुख्य रूप से आलंकारिक है, गणितीय नहीं, जैसे कि हमें इन दोनों को सख्ती से और शाब्दिक रूप से लेना है। लेकिन अंत समय के विपरीत अलंकारिक रूप से, अंत समय के फैसले की अंतिम और व्यापक पूर्ण प्रकृति जो भगवान लाती है वह शैतान और उसके राज्य पर भगवान के फैसले को पूरी तरह से बदल देती है और पलट देती है और अब राज्य को खुद को हस्तांतरित कर देती है, शैतान के शासन के विषयों को स्थानांतरित कर देती है। उनका नियम यह है कि मैं सोचता हूं कि यहां क्या निहित है। साथ ही, मुझे लगता है कि हमें इसे यशायाह द्वारा प्रत्याशित अंतिम समय के उद्धार के हिस्से के रूप में सोचना चाहिए, जिसका अर्थ है राष्ट्रों का समावेश।

इसलिए मुझे आश्चर्य है कि क्या हमें इसे फिर से समझना चाहिए, इतना नहीं कि यह उन लोगों का एक दर्शन है जो पूरे इतिहास में छुटकारा पा चुके हैं और अब नए यरूशलेम में प्रवेश कर रहे हैं। मुझे लगता है कि अध्याय 21 और 22 के अंत समय के संदर्भ को देखते हुए और यशायाह 60 और यशायाह 2 के अर्थ और कार्य को देखते हुए, हमें इन राष्ट्रों को उन राष्ट्रों के रूप में देखना चाहिए जो ईसा के आगमन पर परिवर्तित हो गए हैं जो यशायाह 60 की पूर्ति में नए यरूशलेम में

प्रवेश करते हैं। हाँ, चर्च के पूरे इतिहास में राष्ट्र परिवर्तित होते हैं और परमेश्वर के लोग बन जाते हैं।

लेकिन अब, मुझे लगता है कि यशायाह 2 और यशायाह 60 के अनुरूप, हम अंत समय में परमेश्वर के लोग बनने के लिए राष्ट्रों का जमावड़ा देखते हैं। यूहन्ना हमें यह नहीं बताता कि मसीह का दूसरा आगमन कब घटित होगा। वह यह नहीं बताते कि यह कैसे घटित होता है।

लेकिन स्पष्ट रूप से, यशायाह 2 और 60 की पूर्ति में, मुझे लगता है कि जॉन ईश्वर के लोग बनने के लिए राष्ट्रों के अंतिम एकत्रीकरण और समावेशन को देखता है। पद 27 महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें याद दिलाता है कि यद्यपि नया येरुशलम एक समावेशी शहर है, फिर भी इसकी सीमाएँ हैं। पद 20 में, यह कहा गया है, यद्यपि सभी राष्ट्र इसमें आते हैं, यद्यपि वे अपना धन लाते हैं, वे शहर में योगदान करते हैं, और शायद यह एक पाठ का उदाहरण है जो बताता है कि वास्तव में गतिविधि और सार्थक कार्य और गतिविधि होने वाली है नये यरूशलेम में।

आयत 27 हमें याद दिलाती है कि साथ ही इसमें कभी भी कोई अशुद्ध चीज़ प्रवेश नहीं करेगी। और न ही कोई ऐसा करेगा जो लज्जाजनक या कपटपूर्ण काम करेगा, केवल वे ही लोग होंगे जिनके नाम मेमे के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं। तो रहस्योद्घाटन एक समावेशी शहर है या रहस्योद्घाटन का नया यरूशलेम एक समावेशी शहर है।

इसमें अन्यजातियों को भी शामिल किया गया है, लेकिन साथ ही, इसकी सीमाएं भी हैं। इसमें कुछ भी अशुद्ध नहीं, कोई भी अशुद्ध व्यक्ति प्रवेश नहीं करेगा। श्लोक 27 मुझे बताता है कि वह नहीं सोचता कि राष्ट्रों का हर एक अंतिम व्यक्ति नए यरूशलेम में प्रवेश करने जा रहा है, लेकिन केवल वे ही जिनके नाम मेमे के जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं।

केवल वे जो यीशु मसीह में विश्वास और विश्वास के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। तो हम एक मंदिर शहर के साथ समाप्त होते हैं जो भगवान की महिमा और भगवान की उपस्थिति से इतना भरा हुआ है कि यह एक मंदिर है। एक मंदिर के रूप में जो ईश्वर की उपस्थिति से इतना प्रभावित है कि राष्ट्र अब इसकी रोशनी में आते हैं।

शहर की शुद्धता और पवित्रता का उल्लंघन किए बिना अब राष्ट्रों को शामिल किया गया है, और अब हम अंतिम खंड, अध्याय 22 और श्लोक 1-5 के लिए तैयार हैं। मुझे पढ़ने दो. यह न्यू जेरूसलम मंदिर के बारे में जॉन के दर्शन का अंतिम भाग है, और वह कहता है, फिर स्वर्गदूत ने मुझे क्रिस्टल की तरह स्पष्ट जीवन के जल की नदी दिखाई जो भगवान और मेमने के सिंहासन से महान के बीच में बहती थी। नदी के दोनों किनारों पर शहर की सड़क पर जीवन का पेड़ खड़ा था, जिसमें हर महीने 12 फल लगते थे और पेड़ की पत्तियां राष्ट्रों के उपचार के लिए थीं, अब भगवान के सिंहासन पर कोई अभिशाप नहीं होगा और मेमना नगर में रहेगा, और उसके दास उसकी सेवा करेंगे, वे उसका मुख देखेंगे, और उसका नाम उनके माथे पर रहेगा, फिर रात न होगी, उन्हें दीपक के प्रकाश या सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता न होगी। प्रभु परमेश्वर उनकी ज्योति होगा और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।

और इस प्रकार जॉन का प्रकाशितवाक्य 21 और 22 का अंतिम दर्शन समाप्त होता है। श्लोक 6 हमें एक तरह से पृथ्वी पर वापस लाने की शुरुआत करेगा, एक अर्थ में, वर्तमान में वापस, लेकिन इस बिंदु पर, जॉन अंतिम विरासत, अंतिम के अपने दृष्टिकोण को समाप्त करता है चरम घटना जो भगवान के मुक्तिदायक इतिहास को उसके करीब लाती है। अब, अध्याय 22, श्लोक 1 से 5 में उल्लेख करने के लिए बस कुछ विशेषताएं हैं। अध्याय 22, श्लोक 1 से 5, कोई अतिरिक्त चीज़ नहीं है जिसे जॉन देखता है।

यह कोई अतिरिक्त स्थान नहीं है, कुछ ऐसा है जिसे अब तक के न्यू जेरूसलम मंदिर से अलग समझा जाना चाहिए। 22, 1 से 5 अध्याय 21 से नए यरूशलेम, नए निर्माण मंदिर का एक अलग तरीका या आगे का वर्णन है। और 22, छंद 1 और 2 वह खंड है जो स्पष्ट रूप से वापस इंगित करता है या स्पष्ट रूप से हमारा ध्यान स्वर्ग या वापस की ओर खींचता है। दी गार्डन ऑफ़ इडेन।

और इस खंड में उद्यान और मंदिर दोनों की कल्पना 22, 1 से 5 तक हावी है। और मुझे लगता है कि इस खंड में प्रत्येक कविता या तो ईडन गार्डन या मंदिर से संबंधित है। और मुझे नहीं लगता कि हमें दोनों को अलग करना चाहिए, जैसा कि उम्मीद है कि हम देखेंगे। प्राथमिक पाठ जिसे जॉन चित्रित कर रहा है, हालांकि ऐसे कई सर्वनाशी पाठ हैं जो गार्डन के बारे में बात करते हैं और गार्डन को गूढ़ मोक्ष में शामिल करते हैं।

जॉन शायद इनके बारे में जानते हैं और शायद उन पर विचार भी कर रहे होंगे। लेकिन जॉन मुख्य रूप से यहजेकेल अध्याय 47 पर निर्भर है। पहले 46 छंद मंदिर का वर्णन करते हैं, अंत समय में बहाल किए गए मंदिर का चित्रण जॉन कर रहा है, और अब वह अध्याय 47 पर भी आधारित है।

तो 47 शुरू होता है। वह आदमी मुझे ले आया, शायद देवदूत उसे एक दूरदर्शी दौरे पर ले जा रहा था, और मुझे वापस मंदिर के प्रवेश द्वार पर ले आया। और मैंने मंदिर की दहलीज के नीचे से पूर्व की ओर पानी बहता देखा, क्योंकि मंदिर का मुख पूर्व की ओर था, दिलचस्प बात यह है कि वह दिशा है जिसमें आदम और हव्वा को बगीचे से बाहर निकाला गया था, और करूबों ने प्रवेश द्वार, पूर्व प्रवेश द्वार की रक्षा की थी, बगीचे और मंदिर के बीच संबंध चित्रित करना। पानी मन्दिर की दक्षिणी ओर, वेदी के दक्षिण की ओर से नीचे से बह रहा था।

फिर वह मुझे उत्तरी द्वार से बाहर लाया और बाहरी द्वार के बाहर पूर्व की ओर ले गया और पानी दक्षिण की ओर से बह रहा था। और वह पुरुष हाथ में नापने की डोरी लिये हुए पूर्व की ओर चला, और एक हजार हाथ नापकर मुझे टखने तक गहरे जल में से ले गया। उसने और हजार हाथ नापे और मुझे घुटनों तक गहरे पानी में से निकाला।

उसने और हजार नापे और मुझे कमर तक भरे पानी में से निकाला। और फिर उसने एक हजार और नापा जो इतना गहरा था कि वह पार नहीं कर सकता था क्योंकि पानी बढ़ गया था और तैरने के लिए काफी गहरा था। इसलिए उसने मुझसे पूछा, हे मनुष्य के पुत्र, यहजेकेल, क्या तुम इसे देखते हो? फिर वह मुझे वापस नदी के किनारे ले गया।

जब मैं वहां पहुंचा तो मैंने नदी के दोनों किनारों पर बड़ी संख्या में पेड़ देखे। उसने मुझसे कहा, यह पानी पूर्वी क्षेत्र की ओर बहता है और अराबा में चला जाता है जहां यह समुद्र में मिल जाता है। जब यह समुद्र में मिल जाता है तो वहां का पानी ताज़ा हो जाता है।

यह जीवित प्राणियों से भरा रहता है, या जहां भी नदी बहती है वहां जीवित प्राणियों के झुंड रहते हैं। वहाँ बड़ी संख्या में मछलियाँ होंगी क्योंकि यह पानी वहाँ बहता है और खारे पानी को ताज़ा बनाता है ताकि जहाँ नदी बहती है, वहाँ सब कुछ जीवित रहे। और मैं अभी वहीं रुकूंगा।

लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप प्रकाशितवाक्य 22 के साथ संबंधों पर ध्यान दें, जिसमें जीवन के जल की नदी का उल्लेख है। यह जेकेल इसे जीवन का जल नहीं कहता। जॉन अध्याय 21 में वापस आता है।

परमेश्वर के लोगों को दिए गए वादे का एक हिस्सा यह है कि मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ, जो प्यासा है उसके लिए शुरुआत और अंत हूँ। मैं जीवन के जल के सोते से निःशुल्क पिलाऊंगा। अब, जॉन यहाँ उसी कल्पना का उपयोग करता है।

जो पानी बहता है वह वह नदी है जो यह जेकेल 47 से निकलती है। अब यूहन्ना इसे जीवन का जल कहता है। लेकिन यह यह जेकेल के साथ असंगत नहीं है क्योंकि यह जेकेल स्पष्ट करता है कि जो पानी बहता है वह सभी प्राणियों को जीवन देता है, और यह जहां भी बहता है वहां जीवन देता है।

तो जॉन का वर्णन पूरी तरह से उसके अनुरूप है। ईजेकील की दृष्टि में दूसरा बड़ा अंतर यह है कि नदी मंदिर से बहती है। लेकिन हम पहले ही देख चुके हैं कि जॉन की दृष्टि में, कोई अलग मंदिर नहीं है।

मेम्ना और परमेश्वर मन्दिर हैं। उनकी उपस्थिति नई सृष्टि, नए यरूशलेम को इतना प्रभावित करती है कि उसे मंदिर की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए जॉन मंदिर की छवि लेता है और इसे पूरे शहर में लागू करता है।

अब, जॉन क्या करता है क्योंकि वहाँ कोई भौतिक मंदिर नहीं है, पानी मंदिर की दहलीज से नहीं आ सकता है। इसके बजाय, अब यह परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से आता है। क्यों? क्योंकि अध्याय 21 और पद 22 में भगवान और मेम्ना मंदिर हैं।

मैंने कोई मंदिर नहीं देखा क्योंकि भगवान और मेम्ना ही इसके मंदिर हैं। तो अब यह जेकेल के मंदिर की पूर्ति के रूप में उनके सिंहासन से पानी बहता है। जॉन ने जकर्याह अध्याय 14 पद 8 को अपनी पृष्ठभूमि के साथ-साथ बहते पानी के लिए भी ध्यान में रखा होगा।

लेकिन दूसरी बात जो मैं नोट करना चाहता हूँ वह यह जेकेल की दृष्टि से अलग है वह यह जेकेल 47 में है, जॉन ने पेड़ों को देखा, जाहिरा तौर पर बहुवचन, या मुझे खेद है यह जेकेल, यह जेकेल ने नदी के दोनों किनारों पर पेड़ों को उगते देखा। अब, ध्यान दें कि जॉन क्या देखता है। वह कहते हैं, महान सड़क के बीच में, या यह थोड़ा सा भी हो सकता है, फिर भी ऐसा नहीं है कि हमें

प्रतीकवाद को आगे बढ़ाना चाहिए, सड़क के बीच में नदी का बहना थोड़ा अजीब होगा जब तक कि सड़क बहुत अच्छी न हो, बहुत विस्तृत।

लेकिन इसे समझने का दूसरा तरीका है शहर का प्लाज़ा या चौड़ी खुली जगह, हो सकता है कि नदी वहां से होकर बहती हो। लेकिन एक बार फिर मुझे नहीं पता कि हम कल्पना को बहुत अधिक आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं और उससे इस तरह का शाब्दिक भौगोलिक या वास्तुशिल्प अर्थ निकाल रहे हैं। लेकिन नदी शहर के मध्य में बहती है और फिर जॉन, ईजेकील की तरह, जॉन कहते हैं कि नदी के प्रत्येक किनारे पर जीवन का वृक्ष खड़ा था, जो स्पष्ट रूप से एकवचन था।

अब, कुछ लोगों ने इसे एक सामूहिक छवि के रूप में लिया है कि एक पेड़ कई पेड़ों का प्रतीक है। तो हमें यहाँ पेड़ को कई पेड़ों के रूप में समझना चाहिए, यानी वही पेड़ जो यहजेकेल ने अपने दर्शन में देखे थे। कुछ लोगों ने अजीब-अजीब व्याख्याएं गढ़ी हैं कि वास्तव में, और थोड़ी पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए, यहां कोलोराडो में, जहां मैं रहता हूँ, सबसे लोकप्रिय और आम पेड़ों में से एक जो आप देखते हैं वह एस्पेन पेड़ है।

ऐस्पेन पेड़ों के बारे में जो बात नोट की गई है वह यह है कि आप उन्हें अक्सर पेड़ों में पाते हैं क्योंकि उनकी जड़ प्रणाली वास्तव में भूमिगत रूप से एक दूसरे से जुड़ी होती है। आपके पास एक ऐस्पेन पेड़ उगोगा, और उसकी भूमिगत जड़ें फिर दूसरों को पैदा करेंगी। कुछ लोगों ने यहां कुछ इसी तरह का सुझाव दिया है, कि पेड़ वास्तव में एक तरफ बढ़ता है, लेकिन इसकी जड़ें पानी के नीचे दूसरी तरफ भी बढ़ती हैं, इसलिए आपके पास दोनों तरफ एक पेड़ है।

दो बातें, नंबर एक, मुझे नहीं लगता कि हमें, जैसा कि हम पहले ही नोट कर चुके हैं, इतना शाब्दिक होना चाहिए। दोनों तरफ एक पेड़ का विचार शाब्दिक रूप से समझ में नहीं आता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमें जॉन की छवियों और इस छवि को इस तरह से लेना चाहिए। इसके बजाय उद्देश्य इन दर्शनों का अर्थ है और पाठक में एक प्रतिक्रिया उत्पन्न करना है जो पाठक को पुराने नियम में वापस ले जाएगा।

और यहां मुझे लगता है कि यहजेकेल 47 से शुरुआत करने वाले जॉन का एक उदाहरण अब उसे उस पाठ की ओर वापस खींचता है जिस पर यहजेकेल आकर्षित होता है और वह ईडन गार्डन का विवरण है। तो यहाँ जीवन के वृक्ष की पृष्ठभूमि उत्पत्ति 2 पद 9 है, ईडन गार्डन में जीवन का वृक्ष। तो यह जॉन का है, मुझे लगता है कि यह उत्पत्ति 2 श्लोक 9 में जॉन द्वारा जानबूझकर किया गया भ्रम है और इसके अलावा मुझे लगता है कि यह आगे प्रदर्शित करने का उसका तरीका है कि यह पुनर्स्थापित गार्डन है।

यह ईडन का पुनर्निर्मित, नवीनीकृत उद्यान है जिसके केंद्र में जीवन का वृक्ष है। तो यहजेकेल 47 में ही ईडन गार्डन की कल्पना है, बाहर बहने वाली नदी भी अध्याय 2 में वापस जाती है, वह नदी जो गार्डन से निकलती है। तो, ईजेकील की नदी और पेड़ स्पष्ट रूप से ईडन गार्डन की याद दिलाते हैं, और प्राणियों को जीवन देना ईडन गार्डन की याद दिलाता है।

लेकिन अब जॉन, ईजेकील 47 से शुरुआत करते हुए, मूल रचना खाते पर भी वापस जाता है और इसमें जीवन का वृक्ष भी शामिल है। हालाँकि, अब ध्यान दें कि वह पेड़ के साथ क्या करता है। जीवन के वृक्ष में 12 फसलें होती हैं और 12 महीनों तक फल लगते हैं, यह फिर से ईजेकील 47 पर आधारित है।

लेकिन जॉन कुछ बहुत दिलचस्प करता है। अब यहां के पेड़ उन राष्ट्रों के उपचार के लिए हैं जिन्हें हमने अध्याय 21, छंद 24 और 26 में नए यरूशलेम में प्रवेश करते देखा था। इसलिए यह नए यरूशलेम में प्रवेश करने वाले राष्ट्रों की अब भगवान के लोग बनने की धारणा को दर्शाता है।

उपचार को उसी तरह समझा जाना चाहिए जैसा मैं अध्याय 5 और अध्याय 7 में सोचता हूं। जिन्हें अब मेमने ने अपने खून से छुड़ाया है, अब पत्तियां राष्ट्रों के उपचार के लिए वहां जीवन देती हैं। वे युगान्तकारी मोक्ष में भाग लेते हैं। लेकिन मुझे यह भी आश्चर्य है कि क्या उपचार का हिस्सा यह भी नहीं है कि ये वे राष्ट्र हैं जो अब जानवर के शासन से तबाह नहीं हुए हैं।

ये वे राष्ट्र हैं जो अब जानवर के बहकावे में नहीं आते हैं और जानवर के शासन और शैतान के शासन से नुकसान और तबाह नहीं होते हैं। अब, वे युगान्तकारी मुक्ति का अनुभव करते हैं। अब, पत्तियाँ उन्हें उपचार प्रदान करती हैं।

इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह 22:1, 2, 5, जैसा कि मैंने कहा, नई रचना में कोई नया भौगोलिक स्थान नहीं है। जॉन न्यू जेरूसलम से कुछ और या कुछ अलग नहीं देख रहे हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि बगीचे और मंदिर की भाषा पूरे पुराने नियम के साथ-साथ यहाँ भी बहुत निकटता से विलीन हो गई है।

ईजेकील 47 पहले ही यह कर चुका है। ईजेकील 40-47 ने पहले ही अध्याय 47 में मंदिर की कल्पना को ईडन गार्डन की कल्पना के साथ जोड़ दिया है, जिसमें मंदिर को एक ऐसे स्थान के रूप में चित्रित किया गया है जहां नदी बगीचे से निकलती है और वह स्थान जहां जीवन का वृक्ष और जीवन देने वाले पेड़ अब मौजूद हैं। इसलिए, जॉन को कुछ भी अलग नजर नहीं आता।

यह पूरी तरह से नए यरूशलेम के एक मंदिर के रूप में उनके चित्रण के अनुरूप है जहां भगवान के लोग पुजारी के रूप में सेवा करते हैं। और ऐसा इसलिए है, क्योंकि मेरी समझ में, पुराने नियम का मंदिर, उन सभी चीजों में से एक था, जो उसने ईडन के लघु उद्यान के रूप में कार्य किया था। यदि आप तम्बू के साथ-साथ मंदिर का भी वर्णन पढ़ते हैं, तो यह दिलचस्प है कि लेखक ने पुराने नियम में इसका वर्णन ताड़ के पेड़ों और पौधों और फूलों और इस जैसी चीजों की नक्काशी के रूप में किया है।

इसमें दो करूब और सन्दूक की ओर देखने वाले पवित्र स्थान भी हैं, जो संभवतः उन दो स्वर्गदूतों को दर्शाते हैं जो एक पवित्र मंदिर के रूप में एक अभयारण्य के रूप में ईडन गार्डन के प्रवेश द्वार की रक्षा करते थे। फूल, पौधे और पेड़ हमें ईडन गार्डन के पेड़ों और फलने-फूलने और पहली रचना की याद दिलाते हैं। हम पहले ही देख चुके हैं कि, उदाहरण के लिए, ईजेकील अध्याय 28 में, एडम को बगीचे में एक पुजारी के रूप में चित्रित किया गया था, जो महायाजक के ब्रेस्टप्लेट से 12 पत्थर पहने हुए था, ताकि हमें बगीचे और मंदिर की छवि न दिखनी चाहिए। एक

दूसरे से अलग, लेकिन ईडन गार्डन मूल रूप से एक मंदिर रहा होगा, एक पवित्र स्थान जहां भगवान मूल रूप से आदम और हव्वा के साथ रहते थे और जहां एडम और ईव पुजारी के रूप में कार्य करते थे जो बगीचे के मंदिर के अभयारण्य में भगवान की सेवा और पूजा करते थे।

अब, उसी के अनुरूप, जॉन ईडन गार्डन की कल्पना के संदर्भ में नए निर्माण में नए यरूशलेम मंदिर को भी देखता है। लेकिन हम जल्द ही यह भी देखेंगे कि जॉन एक पल में ही वापस मंदिर की पुरोहिती भाषा की ओर मुड़ने वाला है। लेकिन पद 3, शायद आगे पद 3 में राष्ट्रों के उपचार का वर्णन करते हुए, जॉन कहते हैं, अब कोई अभिशाप नहीं होगा।

कोई शाप न होगा, इसका कारण यह है, कि परमेश्वर और मेमे का सिंहासन नगर में है, और उसके सेवक उसकी सेवा करेंगे। शाप देने की वह भाषा, एक नज़र में, मानवीय पापपूर्णता के कारण अध्याय 3 में ईडन गार्डन के मूल शाप को याद दिला सकती है। लेकिन इसके बजाय, यह जकर्याह के लिए एक संकेत है और जकर्याह अध्याय 14 में समाप्त होता है, अंत समय के युगांतकारी मोक्ष की दृष्टि के साथ समाप्त होता है।

और अध्याय 14, श्लोक 11, वह फिर बसा जाएगा, मुझे खेद है, वह बसा जाएगा, अर्थात् यरूशलेम, वह फिर कभी नष्ट न होगा। विनाश की वह भाषा वह भाषा है जो यहां घटित होती है। वास्तव में, सेप्टुआजेंट में, जकर्याह 14:11 में विनाश के लिए इस्तेमाल किया गया ग्रीक शब्द जॉन द्वारा 22:3 में इस्तेमाल किए गए शब्द के समान है। और जकर्याह में शब्द के पीछे का विचार यह है कि विद्वान अक्सर विनाश पर प्रतिबंध के रूप में अनुवाद करते हैं जो किसी राष्ट्र पर उनकी पापपूर्णता के कारण लगाया गया था, यानी दुष्ट राष्ट्रों को पूर्ण विनाश से गुजरना था।

और अब यूहन्ना कह रहा है कि अब कोई अभिशाप नहीं होगा, अर्थात् किसी नगर या किसी राष्ट्र का विनाश नहीं होगा। क्योंकि अब राष्ट्रों के विनाश का नहीं, बल्कि राष्ट्रों के चंगाई का समय आ गया है। और अब वे नए यरूशलेम में निवास करते हैं और युगांतिक मोक्ष में भाग लेते हैं।

और यह ईश्वर की उपस्थिति के कारण है। परमेश्वर और मेम्रा अब शहर में हैं, और उनकी उपस्थिति अब गारंटी देती है कि राष्ट्रों का और अधिक विनाश नहीं होगा, विनाश पर कोई और प्रतिबंध नहीं होगा। इसके बजाय, छंद 4 से 5 तक, मुझे लगता है, भगवान के लोगों को पुजारी के रूप में चित्रित किया गया है जो बगीचे के मंदिर में उनकी सेवा करते हैं, जो कि उत्पत्ति 1 और 2 में आदम और हव्वा को करना था। तो अब उन्हें इस रूप में चित्रित किया गया है याजक के रूप में उसकी सेवा करना। वे उसका चेहरा भी देखते हैं, बस अब, पुजारी के रूप में, वे भगवान की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं, और वे वास्तव में भगवान की उपस्थिति देखते हैं।

वे वास्तव में उसका चेहरा देखते हैं, लेकिन अब यह महायाजक तक सीमित नहीं है। अब, भगवान के सभी लोग पुजारी के रूप में कार्य करते हैं और वास्तव में भगवान की उपस्थिति देखते हैं। उनके माथे पर उनका नाम है। स्पष्ट रूप से, यह अध्याय 7 और 14 को याद दिलाता है, जहां 144,000 को सील कर दिया गया है और वे अपने माथे पर पिता का नाम लेकर भगवान के सामने खड़े हैं।

यह जानवर के निशान से भी भिन्न है। तो अब आपके पास भगवान के लोग अपने माथे पर भगवान का निशान लेकर खड़े हैं। यह संभवतः ईश्वर के साथ घनिष्ठता और घनिष्ठ संबंध को इंगित करता है, लेकिन संभवतः पुरोहिती भाषा को भी दर्शाता है।

और वह पगड़ी होगी जिसे हारून ने अपने सिर पर तब पहना था जब वह मंदिर में प्रवेश करता था, जब वह तम्बू में प्रवेश करता था, उदाहरण के लिए, निर्गमन 28, और श्लोक 36 से 38। आखिरी वाक्यांश में पुजारी के अलावा, 22 में ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं सेवा की भाषा, उनके चेहरे को देखना और पुजारी के रूप में उनकी उपस्थिति, उनके माथे पर उनका नाम होना। और अब, फिर से, श्लोक 5 में, एक अलग भौतिक मंदिर की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेम्ना और भगवान इसे प्रकाश देते हैं।

अब, यह यह कहकर समाप्त होता है कि वे हमेशा-हमेशा के लिए शासन करेंगे। सबसे पहले, इस पाठ को प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 और पद 10 जैसे ग्रंथों की पूर्ति के रूप में देखा जाना चाहिए, जहां स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के दृश्य में मेमने के लिए गाए गए भजनों में से एक में, उसने हर जनजाति, भाषा के लोगों को छुटकारा दिलाया है, और उन्हें याजकों का राज्य बनाने के लिए जीभ, और वे हमेशा के लिए शासन करेंगे। और अब हम यहाँ अध्याय 22 और पद 6 में इसे पूरा होते हुए देखते हैं, परमेश्वर के लोग सदैव शासन करते हैं।

हमने अध्याय 2 और 3 जैसे ग्रंथों में भी देखा, जहां विशेष रूप से विजेता से अंतिम वादा किया गया था कि वे भगवान के सिंहासन पर बैठेंगे और उसके साथ शासन करेंगे। इसलिए पूरी किताब में, हमने चर्चों से एक प्रत्याशा और एक वादा देखा है कि यदि वे जीत गए, तो वे शासन करेंगे। यहां, हम इसे पूरा होते हुए देखते हैं क्योंकि भगवान के लोग अब हमेशा-हमेशा के लिए शासन करते हैं।

मुझे लगता है कि इसे निर्गमन अध्याय 19, श्लोक 6 की अंतिम पूर्ति के रूप में भी देखा जाना चाहिए, जिसका उल्लेख अध्याय 1, श्लोक 5 और 6 में किया गया था। मसीह ने अब हर जनजाति और भाषा के लोगों को पुजारियों का राज्य बनने के लिए मुक्त कर दिया है। अब, हम उन्हें राजा के रूप में कार्य करते और सभी चीजों पर शासन करते हुए देखते हैं। अध्याय 5 में भी हमने 5, पद 10 को देखा, कि अब मसीह ने सभी जनजातियों और भाषाओं के लोगों को पुजारियों का राज्य बनने के लिए छोड़ा है और वे हमेशा के लिए शासन करते हैं।

दूसरे शब्दों में, श्लोक 4 और श्लोक 5 के पहले भाग में, हम मुझे क्षमा करें, निर्गमन 19, 6 की पूर्ति देखते हैं, यानी कि वे पुजारी होंगे, जिसे फिर से, प्रकाशितवाक्य 1 और प्रकाशितवाक्य 5 उठाता है। वे याजकों का राज्य होंगे। 4 और 5, हम उन्हें पुजारी के रूप में कार्य करते हुए देखते हैं।

वे भगवान की सेवा करते हैं। वे उसका चेहरा और उसकी उपस्थिति देखते हैं। वे अपने माथे पर भगवान के नाम के साथ पुजारी हेडबैंड या पगड़ी पहनते हैं, लेकिन भौतिक मंदिर में नहीं क्योंकि भगवान और मेम्ना इसकी रोशनी हैं।

वह पुरोहिती भाग है। अब, और वे सर्वदा राज्य करेंगे, यह दूसरा भाग पूरा करता है, जो यह है कि वे एक राज्य होंगे। इसलिए, यद्यपि आपको यहां पुजारियों का राज्य शब्द नहीं मिलता है, और यद्यपि आपको निर्गमन 19, 6 का सीधा संकेत नहीं दिखता है, मुझे लगता है कि जॉन निर्गमन 19, 6 के संदर्भ में सोच रहे हैं। यहां हम भगवान के लोगों को देखते हैं, जो पुजारियों का साम्राज्य नहीं कहा जाता।

यहां, हम उन्हें 22 और 1 से 5 तक पुजारियों के साम्राज्य के रूप में कार्य करते हुए देखते हैं। अब, इस पाठ के बारे में कहने के लिए दूसरी बात, इस पाठ के बारे में उल्लेख करने योग्य दूसरी बात यह है कि मुझे लगता है कि हमें इसे उत्पत्ति अध्याय 1 के प्रकाश में पढ़ना चाहिए।, छंद 26 से 28, जहां पहली रचना में, न केवल आदम था, और हमने इसे सर्वनाशी ग्रंथों में देखा है, न केवल आदम को एक पुजारी के रूप में कार्य करना था, इसलिए एक अर्थ में, यहां के लोगों की पुरोहिती गतिविधि ईडन गार्डन उत्पत्ति 1 और 2 में एडम की पुरोहिती गतिविधि को भी दर्शाता है। हमने सुझाव दिया है कि ईजेकील 28 में सर्वनाश पाठ में, एडम को ईडन गार्डन में एक पुजारी के रूप में चित्रित किया गया है। इसलिए, यहां पुरोहिती गतिविधि आदम और हव्वा के लिए बगीचे में पुजारी के रूप में कार्य करने के ईश्वर के इरादे की अंतिम पूर्ति है। लेकिन इसके अलावा, उत्पत्ति अध्याय 1, उत्पत्ति अध्याय 1 और 26 से 28 के प्रकाश में, और भी अधिक विशिष्ट और स्पष्ट रूप से, एक पाठ जिसे हममें से अधिकांश लोग याद करते हैं, लेकिन वास्तव में, मैं श्लोक 26 से शुरू करूंगा और 27 तक पढ़ूंगा, और मैं वहीं रुकूंगा।

हाँ, मैं 28 भी पढ़ूंगा, मुझे लगता है। तो, 26 से 28 तक, भगवान ने आदम और हव्वा को बनाया, और यह कहता है, इसलिए भगवान ने बनाया, श्लोक 26, फिर भगवान ने कहा, आइए हम मनुष्य को अपनी छवि और समानता में बनाएं और उन्हें समुद्र की मछलियों और पक्षियों पर शासन करने दें वायु का, पशुओं पर, और सारी पृथ्वी पर, और भूमि पर रेंगनेवाले सब प्राणियों पर। तो, भगवान ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया; परमेश्वर के स्वरूप में उस ने नर और नारी करके उनको उत्पन्न किया, परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी, और उन से कहा, फूलो-फलो, और गिनती में बढ़ो, पृथ्वी में भर जाओ, और उसे अपने वश में कर लो, समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, पर प्रभुता करो। हर जीवित प्राणी।

इसलिए, उन्हें पृथ्वी को भर देना है, और पृथ्वी पर शासन करना है, और परमेश्वर के स्वरूप वाहक के रूप में पृथ्वी को अपने अधीन कर लेना है। मैं सोचता हूँ कि यहां हम आदम के लिए ईश्वर की मंशा की अंतिम पूर्ति पाते हैं, जो कि सृष्टि पर शासन करना है; अब आप पाते हैं कि परमेश्वर के लोग सृष्टि पर शासन करने के लिए आदम को दिए गए आदेश को पूरा कर रहे हैं, अब वे उत्पत्ति 1, 26 से 28 की पूर्ति में, नई सृष्टि पर शासन करते हैं। इसलिए, जॉन का दर्शन परमेश्वर के लोगों के एक नई रचना, बगीचे में रहने के साथ समाप्त होता है ईडन के साथ, ईश्वर और मेम्ना उनके बीच में रहते हैं, ईश्वर की मंदिर की उपस्थिति पूरी सृष्टि में व्याप्त है, मूल नए यरूशलेम और मंदिर के इरादे को पूरा करती है, ताकि अब ईश्वर की मुक्ति-ऐतिहासिक योजना का लक्ष्य अंततः प्राप्त हो गया है।

इस पर भी ध्यान दें, कोई इसे उन सभी नई विशेषताओं पर ध्यान देकर संक्षेप में प्रस्तुत कर सकता है जो पुराने नियम के पाठ की पूर्ति हैं, हमें नई रचना मिलती है, हमें नए यरूशलेम से

परिचित कराया जाता है, नई वाचा पूरी होती है, हम भगवान के नए लोगों को पाते हैं, ए नए निर्गमन के संदर्भ में नया मंदिर और मोक्ष। तो, इस दृष्टि को इसके संदर्भ में रखने के लिए, इस दृष्टि का समग्र कार्य क्या है? सबसे पहले, स्पष्ट रूप से, इसका तात्पर्य वेश्या बेबीलोन से विरोधाभास करना है। अध्याय 18, श्लोक 4 में, परमेश्वर के लोगों को बाबुल छोड़ने, उससे बाहर आने, वेश्या बाबुल को छोड़ने के लिए बुलाया गया था, और हमने कहा कि यह शारीरिक रूप से इतना अधिक नहीं है, जो असंभव होगा, बल्कि इसके बजाय इसका अर्थ है स्वयं को उनसे अलग करना मूल्यों, रोम की मूर्तिपूजक ईश्वरविहीन प्रथाओं में भाग लेने से इंकार करना।

विचार शारीरिक अलगाव नहीं है, हम देखेंगे कि, मुझे लगता है कि जॉन मानता है कि उसके लोग बने रहेंगे, और वास्तव में, अध्याय 2 और 3 में, वह उन्हें एक वफादार गवाह बनने के लिए कहता है, वे ऐसा नहीं कर सकते कि यदि वे स्वयं को शारीरिक रूप से हटा दें। तो, यह खुद को रोम की विचारधारा से, उनकी ईश्वरविहीन मूर्तिपूजा प्रथाओं से, सम्राट की पूजा करने और विदेशी देवताओं की पूजा करने और जानवर की पूजा करने से अलग कर रहा है, लेकिन अगर उन्हें वेश्या बेबीलोन, जो कि रोम है, को छोड़ना है, तो उन्हें कहीं न कहीं होना चाहिए जाओ, और यह अब नए यरूशलेम में 21 और 22 में घटित होता है। यदि वे एक शहर छोड़ते हैं, तो उन्हें जाने के लिए दूसरे शहर की आवश्यकता होती है, और अब 21 और 22 वह विकल्प प्रस्तुत करते हैं जिसमें भगवान के लोग अब प्रवेश कर सकते हैं।

दूसरा, न्यू जेरूसलम का दृष्टिकोण ईश्वर के लोगों में विश्वासयोग्यता उत्पन्न करने का भी कार्य करता है। इसलिए, मुख्य रूप से इसका मतलब केवल भविष्य की घटना की भविष्यवाणी करना और हमें यह दिखाना नहीं है कि नई रचना कैसी दिखने वाली है और हम क्या करने जा रहे हैं और सब कुछ क्या है, आप जानते हैं, वहां क्या होने वाला है और कौन है वहाँ जा रहा हूँ। इसका उद्देश्य इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना नहीं है।

यह उन लोगों के लिए वादा और इनाम प्रदान करता है जो अपनी वफादार गवाही बनाए रखते हैं। इसका उद्देश्य अध्याय 2 और 3 में चर्चों को वर्तमान में पवित्रता और पवित्रता के लिए प्रेरित करना है। और इसलिए, यह उन लोगों के लिए वादा और इनाम है जो अध्याय 2 और 3 में विजय प्राप्त करते हैं। हमने पहले ही सुझाव दिया है कि 2 और 3 के संदेशों में विजेता से किए गए सभी वादे, उनमें से अधिकांश अध्याय 21 और 22 के लिंक हैं।

और फिर, अंततः, यह कि परमेश्वर के लोग पहले से ही पुजारियों का राज्य हैं, परमेश्वर के लोगों को पहले से ही वर्तमान में नई सृष्टि के जीवन का अनुकरण और साक्ष्य देना चाहिए। इसलिए, मुझे लगता है कि जॉन जो कर रहा है वह इसे न केवल भविष्य की आशा के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, जो कि भविष्य का पुरस्कार और प्रेरणा है, बल्कि इसलिए कि जहां उसके लोग 22, 1 से 5 में राजा और पुजारी के रूप में कार्य करेंगे, बल्कि अध्याय 1 और अध्याय 5, क्योंकि वे पहले से ही परमेश्वर के राजा और पुजारी हैं, उन्हें पहले से ही नई सृष्टि के जीवन की गवाही देनी चाहिए। अब, जॉन के दर्शन के अंत में आकर, अध्याय 22, छंद 6 से 21, मुझे लगता है, कहावतों की एक श्रृंखला के साथ समाप्त होता है कि कभी-कभी यह बताना बहुत मुश्किल होता है कि कौन क्या कह रहा है।

ऐसे कुछ कथन हैं जो मुझे लगता है कि स्पष्ट रूप से यीशु मसीह के हैं। कुछ और भी हैं जो देवदूत हो सकते हैं। कुछ अन्य लोग भी हैं जो संभवतः जॉन ही बोल रहे होंगे।

लेकिन 22:6 और उसके बाद की आवाज़ों को सुलझाना कठिन है। लेकिन मुझे लगता है कि कुल मिलाकर क्या चल रहा है, इससे पहले कि मैं कुछ विवरण देखूं, मुझे लगता है कि कुल मिलाकर जो चल रहा है वह यह है कि यह अब उपदेशों की एक और श्रृंखला है कि पाठकों को पुस्तक पर कैसे प्रतिक्रिया देनी है। और मूल रूप से यह क्या है, यह चर्च की ओर से पवित्रता और आज्ञाकारिता और वफादार गवाही के लिए एक और आह्वान है।

तो, हमने कहा कि 22:5 एक तरह से दृष्टि को समाप्त कर देता है, लेकिन अब ऐसा लगता है जैसे पाठक को पृथ्वी पर वापस लाया गया है, हम कह सकते हैं, अब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की वास्तविकता को जीने के लिए। और इसलिए, अंत तक 22, 6 को सादृश्य में या लगभग अध्याय 1, छंद 1 से 3 के साथ एक पुस्तक के रूप में देखा जा सकता है जो हमें पुस्तक की प्रकृति के बारे में बताता है और हमें कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए। अब, पुस्तक के दूसरे छोर पर, हमारे पास और भी बहुत कुछ है, संपूर्ण दृष्टिकोण देखने के बाद, अब इसका विस्तार हमें और अधिक विस्तार से बताने के लिए किया गया है कि हमें कैसे प्रतिक्रिया देनी है और हमें प्रकाशितवाक्य 4 से 22 की वास्तविकता को कैसे जीना है।

एक लेखक ने कहा, और मुझे लगता है कि वह सही है, रहस्योद्घाटन अंत समय की स्क्रिप्ट नहीं है, यह चर्च की स्क्रिप्ट है। यह इस बात की स्क्रिप्ट है कि हमें वर्तमान में जीवन कैसे जीना है। और अध्याय के अंत तक 22:6 निश्चित रूप से इसकी पुष्टि करेगा।

उदाहरण के लिए, इसकी कुछ विशेषताओं को उजागर करने के लिए, जॉन बेबीलोन वेश्या छवि दर्शन के अध्याय 19 के अंत में एक दृश्य में कहते हैं, जहां जॉन झुकने और देवदूत की पूजा करने के लिए प्रलोभित होता है। एक बार फिर, छंद 9 और 10 में, यूहन्ना 8 और 9 है। वास्तव में, यूहन्ना एक स्वर्गदूत की पूजा करने के लिए झुकने के लिए प्रलोभित होता है, और देवदूत कहता है, ऐसा मत करो; मैं तो एक नौकर हूँ; इसके बजाय, भगवान की पूजा करो. अब, मुझे लगता है कि यहां जो महत्वपूर्ण है, वह न केवल, जैसा कि हमने पहले कहा, दिलचस्प बात यह है कि एक एकेश्वरवादी दृष्टिकोण के संदर्भ में, जहां केवल भगवान की पूजा की जाती है, यीशु मसीह भी पूजा की वस्तु हैं, लेकिन शायद यह एक है दृष्टि की सही प्रतिक्रिया का अनुस्मारक.

जॉन को स्वर्गदूत और उसके द्वारा देखे गए दर्शन से मुग्ध नहीं होना चाहिए, बल्कि इसके बजाय, उसे भगवान की पूजा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। और इसलिए शुरुआत में ही, यह इस दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया का आह्वान है; यह स्वयं ईश्वर की आराधना से कम नहीं होना चाहिए; मैं सोचता हूँ कि जैसे जॉन अपने चर्च को बुला रहा है, वैसे ही जॉन अपने चर्च को प्रतिक्रिया देने के लिए बुला रहा है। श्लोक 11 में दूसरी विशेषता जो दिलचस्प है, श्लोक 11 में, जॉन से कहा गया है, इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को सील न करें, और सील करना इसकी सामग्री को प्रकट न करने, इसे प्रकट न करने की एक छवि है, क्योंकि यह भविष्य के समय के लिए है, और यह भाषा दानियेल अध्याय 12 श्लोक 10 से निकली है, जहाँ दानियेल को दर्शन को सील करने के लिए कहा गया है।

अब जॉन से कहा गया है कि ऐसा न करें, क्यों? क्योंकि यह उनके पाठकों के लिए सीधे तौर पर प्रासंगिक है, वे इसे केवल भविष्य की चीज़ के रूप में नहीं देख सकते। इसके बजाय, यह पाठकों के लिए प्रासंगिक संदेश है कि जॉन को इसे सील नहीं करना है क्योंकि समय निकट है, पूर्ति पहले से ही निकट है, रहस्योद्घाटन उनकी स्थिति को संबोधित कर रहा है। इसके अलावा, श्लोक 11 में जॉन का यह दिलचस्प कथन है, जो गलत करता है वह गलत ही करता रहे, जो नीच है वह नीच ही बना रहे, लेकिन जो सही है वह सही काम करता रहे, और जो पवित्र है वह गलत करता रहे। पवित्र बनें, पवित्रता की प्रतिक्रिया का समर्थन करें। दूसरे शब्दों में, रहस्योद्घाटन की दृष्टि से धार्मिकता और पवित्रता उत्पन्न होनी चाहिए।

लेकिन श्लोक 11 में यह भाषा कुछ दिलचस्प है; जॉन किसलिए बुला रहा है? जॉन ने चर्च को एक वफादार गवाह के रूप में चित्रित किया है या चर्च को विरोध के बावजूद भी एक वफादार गवाह होने की आवश्यकता के रूप में चित्रित किया है, लेकिन फिर यहां वह यह कहकर इसका खंडन करता प्रतीत होता है, जो कोई भी गलत करता है, उसे ऐसा करना जारी रखना चाहिए गलत। यह लगभग वैसा ही है जैसे जॉन ने अब खुद को भाग्य के हवाले कर दिया है, कि जो लोग गलत करते हैं वे गलत ही करेंगे, और जो लोग सही करते हैं वे ऐसा करना जारी रखेंगे, और अंत में निर्णय उसे सुलझा लेगा। लेकिन इसके बजाय, मुझे आश्चर्य है कि क्या इसे लेने का तरीका इसे पाठकों की प्रतिक्रिया या न केवल इस पुस्तक के प्रति दुनिया की प्रतिक्रिया के प्रतिबिंब के रूप में देखना है, बल्कि चर्च की गवाही के रूप में भी देखना है।

कुछ लोग स्वयं को कठोर बना लेंगे और पश्चाताप करने से इनकार कर देंगे, हालांकि अन्य प्रतिक्रिया देंगे। परमेश्वर के लोग विश्वासयोग्यता के साथ जवाब देंगे। ईश्वर के सच्चे लोग विश्वासयोग्यता, आज्ञाकारिता और पवित्रता में प्रतिक्रिया देंगे, जबकि दूसरों के लिए, रहस्योद्घाटन स्वयं को सख्त करने की प्रतिक्रिया लाएगा।

यह यीशु की अपने दृष्टान्तों की शिक्षा के समान हो सकता है। जैसा कि यीशु ने दो बार कहा है, दृष्टान्त, एक ओर, उन लोगों को कठोर बनाने का काम करते हैं जिन्होंने विद्रोह किया और जिन्होंने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। इसने उन्हें कठोर बनाने का काम किया, जबकि जिनके पास सुनने के लिए कान हैं, एक मुहावरा जिसे जॉन कई बार इस्तेमाल करते हैं, जिसके पास सुनने के लिए कान हैं, उसे सुनने दो।

जिनके पास परमेश्वर का वचन सुनने के लिए कान हैं वे पवित्रता और आज्ञाकारिता से उत्तर देंगे। जो सुनने में कमजोर हैं, जो विद्रोही हैं, यह उन्हें कठोर बनाने का काम करेगा, और वे अपनी अवज्ञा जारी रखेंगे। कुछ अन्य पाठों में, सबसे पहले, श्लोक 17 भी कठिन है, जहाँ तक यह पता लगाने की बात है कि कौन क्या कर रहा है।

आत्मा और दुल्लिह्न दोनों कहती हैं, आओ, और सुननेवाला भी कहे, आओ। जो कोई प्यासा हो वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंटमेंत ले। आम तौर पर, इसे एक इंजीलवादी आह्वान के रूप में देखा गया है, यानी, आने वाले लोग गैर-बचाए गए लोगों का आगमन होगा,

और जो लोग पानी का मुफ्त उपहार लेने आते हैं वे न बचाए गए, अविश्वासी होंगे, जो अब प्रतिक्रिया देते हैं सुसमाचार के संदेश के लिए और मोक्ष प्राप्त करें।

हालाँकि, मुझे लगता है कि पहले दो, आते हैं, आत्मा और दुल्हन कहती है, आओ, और जो सुनता है उसे कहने दो, आओ, इसे स्वयं यीशु के आने के लिए एक अनुरोध या प्रार्थना के रूप में समझा जाना चाहिए। श्लोक 7 पर ध्यान दें जो इस प्रकार शुरू होता है: देखो, मैं शीघ्र आ रहा हूँ, धन्य है वह जो अपनी भविष्यवाणी की पुस्तक के वचनों को मानता है। फिर, धन्य है वह जो शब्दों का पालन करता है, हमें एक बार फिर दिखाता है कि इस पुस्तक की प्रतिक्रिया आज्ञाकारिता और पवित्रता में से एक है।

तो ध्यान दें कि अब तक हमने जो भी किताब देखी है, उसमें श्लोक 8 और 9 में पूजा और अब विश्वासयोग्यता और धार्मिकता को जन्म दिया गया है। अब, पद 17 में आगे बढ़ते हुए, आत्मा और दुल्हन कहते हैं, आओ, और जो सुनता है वह कहे, आ। अर्थात् पद 7 में यीशु के शब्दों के उत्तर में, देख, मैं आ रहा हूँ, अब दुल्हन और जो सुनता है, कदाचित्त वह जिसके कान हों, वह सुन ले, अब यह कह कर प्रत्युत्तर दे, कि हे प्रभु यीशु, आ किताब इसी तरह खत्म होती है।

आमीन, प्रभु यीशु आओ। इसलिए मैं देखता हूँ कि यह शब्द यहां आया है, अविश्वासियों के आने के आह्वान के रूप में नहीं, बल्कि एक आह्वान या प्रार्थना या यीशु मसीह के आने के अनुरोध के रूप में, जैसा कि उन्होंने वादा किया था, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। और फिर जो कोई प्यासा हो वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंटमेंत ले।

शायद फिर से, सुसमाचार के विश्वास में प्रतिक्रिया करने के लिए इतना आह्वान नहीं, एक इंजीलवादी आह्वान, लेकिन अध्याय 21 और छंद 6 के प्रकाश में समझा जाना चाहिए, जो प्यासा है, मैं उसे झरने से मुफ्त में पानी दूंगा जीवन का जल. यह वादा है, परमेश्वर के लोगों के लिए एक युगान्तकारी वादा। तो, जो आना चाहता है वह परमेश्वर के लोग होंगे जिन्हें आने और अंतिम उद्धार में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

अंतिम पाठ जिस पर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह श्लोक 18 और 19 है, जिसे मैं आपको प्रदर्शित करना चाहता हूँ, और इसे पाठकों की ओर से एक उपदेश, एक नैतिक प्रतिक्रिया के रूप में भी समझा जाना चाहिए। अर्थात्, श्लोक 18 और 19 आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता का आह्वान हैं। मुझे यह खंड, श्लोक 18 और 19 पढ़ने दीजिए।

मैं हर उस व्यक्ति को चेतावनी देता हूँ जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को सुनता है, यदि कोई उनमें कुछ भी जोड़ता है, तो ईश्वर इस पुस्तक में वर्णित विपत्तियों को उस पर डाल देगा। और यदि कोई भविष्यवाणी की इस पुस्तक से शब्दों को निकालता है, तो भगवान उससे जीवन के पेड़ और पवित्र शहर में उसका हिस्सा छीन लेंगे, प्रकाशितवाक्य 21 और 22, जो इस पुस्तक में वर्णित हैं। पद 18 में विपत्तियाँ तुरहियाँ, कटोरे, मुहरें और शायद अंत समय का न्याय होंगी।

अब, हम इस पाठ को कैसे समझते हैं? जो कोई जोड़ता और घटाता है उसकी यह भाषा विपत्तियों का दोषी होगी, या जो कोई जोड़ता या घटाता है वह प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की विरासत या पुरस्कार में युगांतकारी मोक्ष में भाग नहीं लेगा। आमतौर पर, इन दो छंदों को आमतौर पर दो अलग-अलग में लिया जाता है तौर तरीकों। नंबर एक, वे बाद के लेखकों और बाद के पाठकों और रहस्योद्घाटन के व्याख्याकारों के लिए एक चेतावनी हैं कि वे शब्दों को जोड़कर या आगे पैराग्राफ या अनुभाग लिखकर शब्दों को हटाकर या कुछ ऐसे हिस्सों को हटाकर इसमें छेड़छाड़ न करें जो किसी को पसंद नहीं हैं।

कई लोग इसे इसी तरह से लेते हैं। इसे लेने का दूसरा तरीका यह है कि इसे अविश्वासियों, विशेषकर पंथों और अन्य धर्मों के खिलाफ एक चेतावनी के रूप में देखा जाए जो बाइबिल में किताबें जोड़ देंगे। कुछ लोग इसे महत्वपूर्ण मानते हैं कि यह बाइबिल के बिल्कुल अंत में आता है, और वे इसे संपूर्ण सिद्धांत को शामिल करते हुए देखेंगे।

तो, यह अन्य पंथों और धर्मों और शिक्षाओं के लिए एक चेतावनी है जो अपने स्वयं के लेखन और अपनी पुस्तकों, अपनी स्वयं की बातों को बाइबिल में जोड़ने, या बाइबिल से पुस्तकें निकालने, कुछ पुस्तकों को हटाने, या ऐसा कुछ करने का प्रयास करेंगे। इसलिए, इसे अक्सर पवित्रशास्त्र के अधिकार के बारे में एक प्रकार के ग्रंथ सूची संबंधी कथन के रूप में देखा जाता है और इसके साथ छेड़छाड़ नहीं की जाती है, इसमें से कुछ भी नहीं हटाया जाता है, कुछ भी नहीं जोड़ा जाता है, कि यह भगवान का आधिकारिक शब्द है, और यह जैसा है वैसा ही पर्याप्त है। और मैं निश्चित रूप से उस पर विवाद या बहस नहीं करूंगा।

मैं इससे सहमत होऊंगा, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि ये छंद इस संदर्भ में क्या कर रहे हैं। सबसे पहले, जैसा कि हमने पहले ही नोट किया है, श्लोक 7 से शुरू करते हुए, सब कुछ उपदेश के संदर्भ में है। पद 7 में यीशु कहते हैं, मैं शीघ्र आ रहा हूँ; धन्य हैं वे जो इस भविष्यवाणी के शब्दों का पालन करते हैं।

और फिर जॉन, अपने पाठकों से जो प्रतिक्रिया चाहता है उसे मूर्त रूप देते हुए, स्वर्गदूत द्वारा कहा जाता है, मेरी पूजा मत करो, भगवान की पूजा करो, जो कि पुस्तक के लिए उचित प्रतिक्रिया होनी चाहिए। श्लोक 10 और 11, यह वर्तमान के लिए एक भविष्यवाणी है; इसे सील मत करो, यह अब भगवान के लोगों के लिए है। और जो धर्म है वह धर्म ही करता रहता है; जो पवित्र है वह पवित्र ही रहता है।

श्लोक 14 और अनुसरण करते हुए, धन्य वह है जो शुद्ध है; वे जीवन का वृक्ष प्राप्त करेंगे। तो यह उपदेश है। अब, श्लोक 18 से 19, मुझे लगता है, परमेश्वर के लोगों को विश्वासयोग्यता, पवित्रता और आज्ञाकारिता के लिए प्रेरित करने का उपदेश जारी है।

अब, मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? सबसे पहले, ध्यान दें कि ये छंद एक बार फिर से एक संकेत हैं, जैसा कि हमने प्रकाशितवाक्य के माध्यम से अक्सर देखा है, पुराने नियम का एक संकेत है। आपको यही भाषा पुराने नियम के कानून के संबंध में व्यवस्थाविवरण में भी मिलती है। इसलिए,

उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण अध्याय 4, जैसा कि राष्ट्र को याद दिलाया जाता है कि कानून को न छोड़ें, इसकी उपेक्षा न करें।

और लेखक कहता है, यह अध्याय 4 और श्लोक 2 है, मैं श्लोक 1 पढ़ंगा। अब सुनो, हे इस्राएल, वे नियम और कानून जो मैं तुम्हें सिखाने पर हूँ। उनके पीछे हो लो, कि तुम जीवित रहो, और उस देश में जाओ, जो यहोवा परमेश्वर ने तुम्हें दिया है, और तुम्हारे पुरखाओं ने तुम्हें दिया है। यह दिलचस्प है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 22, श्लोक 19 में एक बात यह है कि यदि वे जोड़ते या घटाते हैं, तो उन्हें जीवन का वृक्ष और पवित्र नगर प्राप्त नहीं होगा।

वह है नई रचना, उनका वर्सा, भूमि। परन्तु अब आयत 2 कहती है, जो आज्ञा मैं तुझे देता हूँ उस में न बढ़ाना, और न घटाना, परन्तु जो आज्ञा तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसका पालन करना। व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 और श्लोक 32 में, हम कुछ ऐसा ही पाते हैं।

12 श्लोक 32 में, अंत में, लेखक कहता है, मैं श्लोक 31 पढ़ंगा, तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की उस रीति से आराधना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वे अपने देवताओं की पूजा करते समय हर प्रकार के घृणित कार्य करते हैं जिनसे यहोवा घृणा करता है। यहाँ तक कि वे अपने बेटे-बेटियों को भी आग में जला देते हैं और देवताओं को बलि चढ़ा देते हैं। देखो, जो कुछ मैं आज्ञा देता हूँ तुम वही करो; इसमें न तो जोड़ें और न ही हटाएं।

दिलचस्प बात यह भी है कि यह मूर्तियों और अन्य देवताओं की पूजा न करने के संदर्भ में है जैसा कि राष्ट्र करते हैं। तो, ध्यान देने वाली पहली बात यह है कि जॉन ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से निकलने वाली भाषा का सहारा लिया है, और उन दोनों संदर्भों में, न जोड़ने या हटाने वाले कथन कानून को बनाए रखने के संदर्भ में थे, जो कि सब कुछ कर रहे थे इसे कहते हैं। इसलिए, व्यवस्थाविवरण में भी, हटाने और जोड़ने का विचार केवल अधिक शब्द जोड़ना या हटाना नहीं था; इसका संबंध यह सुनिश्चित करने से था कि आप इसका पालन करें और इसे बनाए रखें।

दूसरा, मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि यह किसे संबोधित है। श्लोक 18 और 19 इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को सुनने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चेतावनी देने के लिए संबोधित हैं। वह कौन व्यक्ति है जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्द सुनता है? अध्याय 1, 2, और 3 पर वापस जाएँ। यह चर्च है।

अध्याय 1 और श्लोक 3, धन्य है वह जो पढ़ता है और जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को सुनता है और इसका पालन करता है। तो, जो भविष्यवाणी के शब्दों को सुनता है वह चर्चों में से, अध्याय 2 और 3 में सात चर्च या हमारे आज के चर्च होंगे। दूसरे शब्दों में, यह चर्चों या विश्वासियों को संबोधित कर रहा है।

और यहां उन्हें चेतावनी दी गई है कि जब वे इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्द सुनें, तो इसे नजरअंदाज न करें, बल्कि इसे मानें। इसलिए, यह बाद के उन लेखकों को संबोधित नहीं है जो पुस्तक के साथ छेड़छाड़ करेंगे। यह अविश्वासियों को संबोधित नहीं है और वे पुस्तक के साथ क्या कर सकते हैं।

यह पंथों और झूठे धर्मों को संबोधित नहीं है। यह चर्च को संबोधित है। इसके अलावा, इसका मतलब यह है कि मुझे लगता है कि हमें इस पाठ को अध्याय 1 श्लोक 3 के साथ पुस्तक के अंत के रूप में देखना चाहिए। 1 श्लोक 3 उस व्यक्ति के लिए आशीर्वाद की घोषणा करता है जो परमेश्वर का वचन सुनता है और उसका पालन करता है।

अब, हम उस व्यक्ति के लिए शाप पाते हैं जो परमेश्वर का वचन सुनता है और उसे मानने से इन्कार करता है। दूसरे शब्दों में, जोड़ने और हटाने का क्या मतलब है? मुझे लगता है कि यह ईश्वर के वचन की अवज्ञा करने और उसे मानने से इन्कार करने का रूपक है, खासकर मूर्तिपूजक बुतपरस्त दुनिया के साथ समझौता करके। वही चीज़ जिसके विरुद्ध इज़राइल को व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 में चेतावनी दी गई थी।

अब, जॉन अध्याय 2 और 3 में अपने चर्चों को चेतावनी दे रहा है कि जब वे पुस्तक को पढ़ते हुए सुनते हैं, तो एकमात्र उचित प्रतिक्रिया पूजा, आज्ञाकारिता, धार्मिकता, पवित्रता, जल्द ही होने वाली उम्मीद के प्रकाश में होती है। यीशु मसीह की वापसी, विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता में जवाब देना, आज्ञाकारिता में जवाब देने से इन्कार करना, मूर्तियों को प्रतिस्थापित करना और जोड़ना, भगवान के वचन की उपेक्षा करके और उसका पालन करने से इन्कार करके उसे दूर ले जाना। परमेश्वर के वचन में जोड़ने और घटाने का यही अर्थ है। इसलिए, यह अन्य पंथों और धर्मों के लिए शब्द न जोड़ने का आह्वान नहीं है।

यहां विचार यह नहीं है कि आप नए वाक्य या पैराग्राफ लिखते हैं, मैं सहमत हूं कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। यह एक नैतिक आह्वान है। यह प्रथम पाठकों के लिए रोम के बुतपरस्त, मूर्तिपूजक साम्राज्य में भाग लेने से इन्कार करने के लिए आज्ञाकारिता और वफादारी का आह्वान है।

आखिरी बात जो मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बारे में कहना चाहता हूं, और फिर मैं इसे कुछ टिप्पणियों के साथ समाप्त करना चाहता हूं कि हम इसे कैसे पढ़ते हैं। उस भाषा पर ध्यान दें जो आपको यहां कई बार मिलती है। पद 7 से शुरू करते हुए, यीशु कहते हैं, देखो, मैं शीघ्र आ रहा हूँ।

पद 12, देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ। और फिर, श्लोक 20 में, हां, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। संभवतः सभी शब्द स्वयं यीशु द्वारा कहे गए हैं।

हम उस शीघ्रता को कैसे समझें? खैर, कुछ ने इसका अनुवाद किया है, मैं जल्दी आ रहा हूँ। और जिस गति से वह आएगा उस गति से यह विचार अधिक होगा, ऐसा नहीं है कि यह बहुत जल्द घटित होने वाला है। उदाहरण के लिए, पाठकों के जीवनकाल में, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि जॉन गलत था।

यीशु शीघ्र वापस नहीं आये। हालाँकि, मुझे लगता है कि इसे देखने का तरीका यह है कि हमें इसकी व्याख्या इस दृष्टिकोण से करनी चाहिए कि यह चर्च द्वारा मसीह की शीघ्र वापसी की अपेक्षा को दर्शाता है। सदियों से, चर्च ने हमेशा उम्मीद की है कि ईसा मसीह किसी भी समय वापस आ सकते हैं।

हालाँकि हमें कोई अंदाज़ा नहीं है कि यह कब होने वाला है, मसीह की शीघ्र वापसी, कि वह किसी भी समय वापस आ सकता है, जो सच था। वास्तव में, तथ्य यह है कि वह अपने उद्धार और राज्य का उद्घाटन करने के लिए पहली बार आ चुका था, इसका मतलब था कि वह इसे पूरा करने और इसे इसकी समाप्ति तक लाने के लिए किसी भी समय वापस आ सकता था। इसलिए मेरा मानना है कि यहां जल्द ही अपनी पूरी ताकत के साथ समझा जाना चाहिए।

मसीह जल्द ही आ रहा है। लेकिन विचार यह है कि चर्च ने हमेशा मसीह की शीघ्र वापसी की उम्मीद की है, हालाँकि हम यह नहीं जानते कि यह कब होने वाला है। वह यहाँ इन कहावतों में परिलक्षित होता है।

लेकिन फिर, मसीह की वापसी की शीघ्रता ही इस अंतिम खंड की नैतिक अपील में तात्कालिकता जोड़ती है, अकेले ईश्वर की पूजा करना, विश्वासयोग्यता, पवित्रता, धार्मिकता, यह सुनिश्चित करना कि हम पुस्तक के शब्दों का पालन करें और उनका पालन करें। बुतपरस्त मूर्तिपूजक दुनिया के साथ समझौता करने से इनकार करके रहस्योद्घाटन का। और इस प्रकार प्रकाशितवाक्य की पुस्तक समाप्त होती है। और उचित ही, इसका अंत आमीन, प्रभु यीशु आओ के साथ होता है।

और मुझे लगता है कि दिन के अंत में रहस्योद्घाटन के लिए उचित प्रतिक्रिया यह होगी कि हर कोई चिल्लाए और कहे, आमीन, आओ, प्रभु यीशु। और जैसे ही हम उसकी प्रतीक्षा करते हैं, हम पवित्रता और पवित्रता और धार्मिकता का जीवन जीते हैं। हम उनसे प्रभावित होने से इनकार करते हैं, और हम मूर्तिपूजक, ईश्वरविहीन, दमनकारी बुरी प्रथाओं और प्रणाली और मूल्यों में भाग लेने से इनकार करते हैं जो न केवल रोमन साम्राज्य बल्कि आज हमारी दुनिया में संस्कृतियों और राष्ट्रों की भी विशेषता हैं।

अब, मैं अगले कुछ मिनटों में संक्षेप में यह प्रश्न उठाकर अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ: हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कैसे पढ़नी चाहिए? रहस्योद्घाटन पर व्याख्यान की इस श्रृंखला की शुरुआत में, हमने कहा कि रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने का एक बहुत लोकप्रिय तरीका इसे हमारे आधुनिक दिनों के प्रकाश में पढ़ने योग्य चीज़ के रूप में देखना है। हमें रहस्योद्घाटन के दृष्टिकोण और भाषा और आधुनिक समय, अब 21वीं सदी, आधुनिक समय की घटनाओं और व्यक्तियों और राष्ट्रों और लोगों और प्रौद्योगिकियों के बीच संबंध बनाना चाहिए। इसलिए, जैसा कि अतीत में कई लोगों ने वर्णन किया है, यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक के साथ पढ़ने जैसा है, एक हाथ में रहस्योद्घाटन के लिए खुली बाइबिल और दूसरे हाथ में सुबह का समाचार पत्र पढ़ना।

विचार यह है कि हम तत्काल संबंध बनाते हैं और हम देखते हैं कि जॉन वास्तव में भविष्यवाणी कर रहा है कि हमारे दिन में क्या चल रहा है। हमारे पास इसे पढ़ने की कुंजी है। आमतौर पर इसका मतलब यह है कि हम अपने अस्तित्व की साजिश रचने की कोशिश करते हैं और देखते हैं कि हम अंत के कितने करीब हैं।

और कभी-कभी, इसका परिणाम यह भी होता है कि मसीह कब वापस आने वाला है। उन सभी में एक बात समान है। वे सभी असफल हो गए हैं।

यदि यह प्रकाशितवाक्य को पढ़ने का उचित तरीका नहीं है, तो हमें इसे कैसे पढ़ना चाहिए? मैं पाँच बातें सुझाता हूँ। सबसे पहले, यह दूसरों से बस थोड़ा सा अलग है। लेकिन सबसे पहले, रहस्योद्घाटन यह सुझाव देता है कि इतिहास एक लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है और ईश्वर ही वह है जो इसे इसकी परिणति तक लाएगा।

इसलिए यह मानवीय प्रयास से नहीं आएगा। रहस्योद्घाटन एक दृष्टिकोण नहीं है कि हमारी वर्तमान संस्कृति और हमारा समाज क्या बन सकता है, हालाँकि यह ऐसा कर सकता है। लेकिन यह इसका प्राथमिक उद्देश्य नहीं है।

रहस्योद्घाटन केवल एक दर्शन नहीं है, विशेषकर नए यरूशलेम के बाद के अध्यायों में। यह हमारे वर्तमान समाज और हमारे वर्तमान दिन के लिए हमें आशा देने वाली एक दृष्टि मात्र नहीं है। नहीं, यह हमें भविष्य के लिए आशा देता है।

यह हमें याद दिलाता है कि ईश्वर इतिहास को कहीं आगे बढ़ा रहा है। भगवान इतिहास को समाप्त करने जा रहे हैं। वह स्वयं हस्तक्षेप करेगा और वह दुनिया को सही कर देगा।

अपने न्याय और उद्धार के माध्यम से, भगवान इतिहास को उसके करीब लाने जा रहे हैं। इसलिए, रहस्योद्घाटन, हम रहस्योद्घाटन की टेलिक भावना को नहीं छोड़ सकते, कि इसका एक लक्ष्य है, कि हमारी दुनिया कहीं जा रही है, और भगवान ही एक है। ईश्वर अल्फ़ा और ओमेगा है, जो उस प्रक्रिया की शुरुआत में खड़ा है और वह जो अंत में खड़ा है, जो इसे इसके लक्ष्य तक लाएगा।

हमारी आशा है भविष्य में यीशु मसीह का आगमन, न्याय और मुक्ति के माध्यम से इतिहास के लिए ईश्वर की योजना को पूरा करना और इस दुनिया को सही करना। यही परमेश्वर के लोगों की आशा है। लेकिन दूसरा, अगले चार जिन पर मैं जोर देना चाहता हूँ, मुझे लगता है कि वे भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से स्पष्ट रूप से सामने आए हैं और वह पहला या नंबर दो है, रहस्योद्घाटन पूजा और निष्ठा का आह्वान है।

वह रहस्योद्घाटन है; हमें इसे पूजा और निष्ठा के आह्वान के रूप में पढ़ना चाहिए। अध्याय 4 और 5 में जॉन के दर्शन की शुरुआत में ही पुस्तक की शुरुआत अध्याय 4 और 5 में एक छवि के साथ होती है जो हमें याद दिलाती है कि केवल भगवान और मेम्रा ही पूजा के योग्य हैं। किसी और चीज़ की पूजा करना, किसी अन्य व्यक्ति की, किसी अन्य भौतिक संपत्ति की, किसी अन्य संस्कृति की, किसी अन्य राष्ट्र की, किसी अन्य सरकार की, किसी और चीज़ की पूजा करना, किसी और चीज़ के प्रति अपनी निष्ठा देना मूर्तिपूजा है।

रहस्योद्घाटन हमारे लिए अपनी दुनिया और अपने जीवन में मूर्तिपूजा के खतरों को समझने और भगवान और मेमने के प्रति विशेष निष्ठा देने का आह्वान है। रहस्योद्घाटन हमारे लिए एक ऐसी दुनिया में एक आह्वान है जो ईश्वर का विरोध करता है, एक ऐसी दुनिया में जो अपनी संप्रभुता को

स्वीकार करने से इनकार करता है, रहस्योद्घाटन भगवान के लोगों के लिए स्वर्ग में शामिल होने और पूजा करने और अल्फा और ओमेगा की संप्रभुता को स्वीकार करने का आह्वान है, पहला और अंतिम, वह जो है और जो था और जो आने वाला है। हमें प्रकाशितवाक्य को ईश्वर और मेरे की पूजा और निष्ठा के आह्वान के रूप में पढ़ना चाहिए और यह पहचानना चाहिए कि किसी और चीज़ की पूजा और निष्ठा देना मूर्तिपूजा से कम नहीं है।

नंबर तीन, हमें रहस्योद्घाटन को साक्ष्य और मिशन के आह्वान के रूप में भी पढ़ना चाहिए। ध्यान दें कि पूरी किताब में कितनी बार चर्च का वर्णन किया गया है या लोगों को ऐसे लोगों के रूप में वर्णित किया गया है जो अपने वफादार साक्ष्य और यीशु मसीह की गवाही के शब्द को बनाए रखते हैं। अर्थात्, चर्च, रहस्योद्घाटन, चर्च के लिए गवाही में संलग्न होने का आह्वान है।

हमें नई सृष्टि के जीवन का साक्षी बनना है। हमें ईश्वर की वास्तविकता और उसके द्वारा यीशु मसीह के माध्यम से प्रदान किये गये उद्धार का गवाह बनना है। अपनी आराधना के माध्यम से, हमें इस वास्तविकता का गवाह बनना है कि ईश्वर कौन है और उसने यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से अपने लोगों के लिए क्या किया है।

तथ्य यह है कि हम पहले से ही पुजारियों का राज्य हैं, यह तथ्य कि यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के माध्यम से पहले से ही अपने चर्च को पुजारियों के राज्य के रूप में बनाया है, इसका मतलब है कि हमें एक वैकल्पिक दुनिया की वास्तविकता का गवाह बनना है, एक नई रचना जो न्याय की विशेषता है और विश्वासयोग्यता और प्रेम और धार्मिकता, एक ऐसा स्थान जहां पूर्ण पूजा होती है, एक ऐसा स्थान जहां पूर्ण गतिविधि और सार्थक जीवन केवल नई सृष्टि में उभरता है। लेकिन अब उसका प्रतिनिधित्व किया जाना चाहिए, उसे अब पुजारियों के राज्य द्वारा देखा जाना चाहिए जिसे भगवान ने पहले ही अपने पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से बनाया है। नव सृजन की वास्तविकता हमारे जीवन में पहले से ही स्पष्ट होनी चाहिए।

हमें नई सृष्टि के जीवन की गवाही देनी चाहिए और उसका गवाह बनना चाहिए। तो, उस अर्थ में, रहस्योद्घाटन भगवान के लोगों, चर्च की ओर से मिशन और गवाही के लिए एक आह्वान है। चौथा, हमें रहस्योद्घाटन को विवेक और प्रतिरोध के आह्वान के रूप में पढ़ना चाहिए।

अर्थात्, पाप की भ्रामक प्रकृति के कारण, शैतान की भ्रामक प्रकृति और परमेश्वर के उद्देश्यों और उसके लोगों को विफल करने और हमें भटकाने के उसके प्रयासों के कारण, इसके लिए विवेक की आवश्यकता होती है, इसके लिए अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। और रहस्योद्घाटन हमें वह अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। हमें यह निर्धारित करने के लिए अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है कि बेबीलोन हमारे समय और युग में कहां मौजूद है।

हमें यह निर्धारित करने के लिए अंतर्दृष्टि और विवेक की आवश्यकता है कि कहां अन्याय है, कहां मूर्तिपूजा है, कहां भक्तिहीनता है, कहां हिंसा और नुकसान है। हमें यह देखने के लिए अंतर्दृष्टि और विवेक की आवश्यकता है कि वह हमारे जीवन में, हमारी अपनी संस्कृतियों में, अपने राष्ट्रों में, अपने देशों में और अपनी सरकारों में कहां मौजूद है। हमें अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है और फिर हमें उसका विरोध करने और उसके खिलाफ खड़े होने की जरूरत है, हिंसा के माध्यम से

नहीं, बल्कि मेमे यीशु मसीह के प्रति वफादार गवाही और नई सृष्टि की वास्तविकता के प्रति वफादार गवाही के माध्यम से।

जैसा कि वास्तविक सर्वनाशकारी शैली में होता है, हमने रहस्योद्घाटन को ईश्वरहीनता को उजागर करते देखा है। यह मूर्तिपूजा और दमनकारी राष्ट्रों और साम्राज्यों को उजागर और उजागर करता है, लेकिन यह एक वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य भी प्रदान करता है। और हमें अंतर्दृष्टि और विवेक और अपने वफादार गवाह के माध्यम से प्रतिरोध करने की क्षमता की आवश्यकता है, चाहे बेबीलोन कहीं भी हो।

मेरे एक सहकर्मी ने एक बार कहा था कि बेबीलोन मानवता द्वारा स्वर्ग स्थापित करने का प्रयास है, जबकि ईश्वर को तस्वीर से पूरी तरह बाहर रखा गया है। यह निर्धारित करने के लिए कि हमारे अपने जीवन और हमारे दिन और उम्र में वह कहां है, साथ ही खड़े होकर उसका विरोध करने के लिए विवेक और अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है। लेकिन यह हमें अपने जीवन से इसे जड़ से उखाड़ने का भी आह्वान करता है।

हम स्वयं से शुरुआत करते हैं और महसूस करते हैं कि एक तरह से हम अनजाने में ही बेबीलोन के साथ बिस्तर पर आ गए हैं। पाँचवाँ और अंत में, हमें प्रकाशितवाक्य को आज्ञाकारिता और शिष्यत्व के आह्वान के रूप में पढ़ना चाहिए। परमेश्वर के लोग वे हैं जो मेम्ना जहां भी जाता है उसका अनुसरण करते हैं।

हमने पुस्तक के अंतिम छंदों, अध्याय 22, छंद 6 से लेकर अंत तक को देखा, जो कि परमेश्वर के लोगों की ओर से पवित्रता और विश्वासयोग्यता का आह्वान है। परमेश्वर के लोग वे हैं जो मेम्ना जहां भी जाता है उसका अनुसरण करते हैं। रहस्योद्घाटन यीशु मसीह के व्यक्तित्व के लिए अयोग्य आज्ञाकारिता और शिष्यत्व का आह्वान है, चाहे इसके परिणाम कुछ भी हों।

इसलिए, यदि प्रकाशितवाक्य को पढ़ते समय हममें कम से कम वे पाँच प्रतिक्रियाएँ जागृत नहीं होती हैं, तो संभवतः हमने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को सुनने के लिए कान रखने की पुकार पर ध्यान नहीं दिया है।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह अंतिम सत्र 30, प्रकाशितवाक्य 22, नया यरूशलेम, और रहस्योद्घाटन की पुस्तक कैसे पढ़ें।